शिक्षा की शुरुआत और नाटक

पारुल बत्रा दुग्गल

आँगनवाड़ी में आने वाले बच्चों के संकोच और झिझक को कम करने का एक तरीक़ा नाटक भी हो सकता है। ऐसा तरीक़ा जिसमें बच्चों को ख़ूब मज़ा आए, कुछ-न-कुछ नया करने की आज़ादी मिले, खिलखिलाने का, शरारतों का माहौल हो। इन सबके बीच उनका सीखना भी हो रहा हो। यह लेख ऐसी ही एक आँगनवाड़ी के बारे में है जहाँ कार्यकर्त्री ने नाटक को बच्चों के साथ संवाद करने, उनके आनन्द और सीखने का माध्यम बनाया।

भोपाल के कोलार इलाक़े में, कलियासोत नदी के किनारे दामखेड़ा नाम की एक बस्ती है। यहीं प्राथमिक शाला दामखेड़ा है, और इसी शाला के प्रांगण में स्थित है आँगनवाड़ी केन्द्र दामखेड़ा। यहाँ मीना कनौजिया साल 2006 से काम कर रही हैं। उन्होंने स्नातक तक पढ़ाई की है और अपनी नौकरी की शुरुआत से वे इसी आँगनवाड़ी में काम कर रही हैं।

मीनाजी हमेशा से ही महिला एवं बाल विकास विभाग द्वारा चलाए जा रहे सभी कार्यक्रमों और अभियानों में सक्रिय सहभागिता करती रही हैं। उन्होंने बच्चों की शिक्षा, पोषण, स्वास्थ्य और स्वच्छता को लेकर अभिभावकों को हमेशा जागरूक किया है। आँगनवाड़ी में आने वाली माताओं से वे हमेशा इस बारे में बात करती हैं कि वे बच्चों को घर पर क्या-क्या सिखा सकती हैं। जो कहानियाँ और कविताएँ वे आँगनवाड़ी में सिखाती हैं उन्हें वे माताओं को बच्चों के साथ घर पर दोहराने के लिए कहती हैं।

उन्होंने ऐसे टीएलएम बनाने की दिशा में भी काफ़ी काम किया है जो लम्बे समय तक काम आ सकते हैं। आँगनवाड़ी में जिन बोरियों में अनाज आता है उनसे किताबें रखने के लिए पॉकेट बोर्ड और कठपुतलियाँ बनाई हैं। वे नियमित रूप से बाल मेलों और बाल चौपाल का आयोजन करती रहती हैं, अपने विभाग की सेक्टर मीटिंग में सन्दर्भदाता की भूमिका भी निभाती हैं और शाला-पूर्व शिक्षा के अपने अनुभवों को साथी कार्यकर्त्रियों के साथ साझा करती हैं। मीनाजी ने आँगनवाड़ी में आने वाले 3 से 6 वर्ष के 30 बच्चों के साथ शाला-पूर्व शिक्षा के पाठ्यक्रम पर काम करते हुए दस से ज़्यादा नाटक तैयार किए हैं। आज उनकी आँगनवाड़ी का हर बच्चा नाटक में अभिनय करने में सक्षम है।

चित्र 1: संवाद और आनन्द को सीखने का माध्यम बनाना महत्त्वपूर्ण होता है

चित्र 2 : बीज बोने की गतिविधि और कहानियों पर आधारित नाटक करते बच्चे

आँगनवाड़ी में कार्यकर्त्री द्वारा किया गया काम

शुरुआत में, बच्चे बिना नहाए ही आँगनवाड़ी आ जाते थे, इसलिए पहले उनकी साफ़-सफ़ाई पर ध्यान दिया। उनसे कहा गया कि वे नहाकर, साफ़-सुथरे बनकर आएँ। बस्ती के लोग मीनाजी से कहते थे कि आँगनवाड़ी में होता ही क्या है, और इतने छोटे बच्चों को क्या सिखाओगी? तब उन्होंने अभिभावकों से बात करनी शुरू की और इस बात के लिए राजी किया कि वे अपने बच्चों को रोज़ आँगनवाड़ी भेजें। साथ ही, उन्होंने अभिभावकों को भी आँगनवाड़ी आने को कहा। जब अभिभावक आँगनवाड़ी आते, वे देखते कि यहाँ अच्छी गतिविधियाँ हो रही हैं।

उन्होंने एक बार बाल चौपाल का आयोजन किया। इसमें जब बच्चों ने अभिभावकों के सामने नाटक का मंचन किया तब उनकी राय बदली। सभी अभिभावक अपने बच्चों को मंच पर अलग-अलग भूमिका निभाते देख आश्चर्यचकित हुए।

शुरुआती प्रशिक्षण के बाद कार्यकर्त्री ने शाला-पूर्व शिक्षा पर काम किया। बच्चे जल्द ही कविता-कहानियाँ सीख गए, और उन्हें मज़े से गाने और दोहराने लगे। वे कविता के पोस्टर में वर्ण पहचान करने लगे, और कबड्डी तथा अन्य खेलों के नियम जानने लगे। उन्हें लगा कि अब आगे ऐसा क्या काम किया जाए जो मेरे और बच्चों, दोनों के लिए चुनौतीपूर्ण हो। यही वह क्षण था जब उन्होंने नाटक तैयार करने की ठानी। और इस तरह उनका रुझान उन कहानियों की तरफ़ बढ़ा जिन पर नाटक तैयार किए जा सकते थे।

नाटक की तैयारी

बच्चों के साथ नाटक करने की शुरुआत के बारे में पूछने पर मीनाजी कहती हैं, "पहले मैं बच्चों के साथ कविता-कहानियाँ सुनने-सुनाने पर ही काम करती थी। जब लगा कि बच्चे इन्हें अच्छे-से समझ रहे हैं तब मैंने नाटक पर काम करने का निश्चय किया। हालाँकि, मेरे मन में भी संशय था कि चार साल के बच्चे

> **"पहले तो मैं बच्चों के साथ कविता-कहानियाँ सुनने-सुनाने पर ही काम करती थी। जब लगा कि बच्चे इन्हें अच्छे-से समझ रहे हैं तब मैंने नाटक पर काम करने का निश्चय किया।"**

क्या नाटक कर भी पाएँगे! मैंने ख़ुद से कहा कि पहले यह काम किया जाए, फिर निर्णय लिया जाए। बच्चों को नाटक सिखाने से पहले कुछ तैयारी की। शाला-पूर्व शिक्षा की शिक्षण मार्गदर्शिका से ऐसी कहानियाँ चुनीं जिन पर नाटक किए जा सकते थे। ऐसी कुछ कहानियों के नाम हैं :

- चिड़ा-चिड़िया ('मेरा परिवार' थीम)
- अवनी और मटर का दाना ('सब्ज़ियाँ' थीम)
- आलू मालू कालू ('सब्ज़ियाँ' थीम)
- नीला फल ('फल' थीम)
- आसमान गिरा ('मौसम और समय' थीम)

नाटक की शुरुआती तैयारी के लिए पहले बच्चों को यह कहानियाँ बार-बार सुनाईं। सभी बच्चों से सुनीं भी ताकि उन्हें कहानी याद हो जाए। कहानी और उसके पात्रों पर बात की। मसलन, 'चिड़ा-चिड़िया' कहानी में चिड़िया कैसे आवाज़ करती है; चिड़िया को कहाँ देखा है; चिड़िया सुबह जल्दी क्यों आती है; आदि। बच्चों ने बहुत सारी बातें बताईं। तब मैंने बच्चों से सुबह जल्दी उठकर चिड़िया देखने को भी कहा। इससे वे सुबह जल्दी आँगनवाड़ी आने लगे। चूँकि कहानी में खिचड़ी का भी ज़िक्र था, अत: उनसे खिचड़ी कैसे बनती है; चिड़िया, खिचड़ी बनाने के लिए कौन-कौन-से दाने लाई; आपने बकरी चराने वाले को कहीं देखा है क्या; जैसे सवालों पर बातचीत की। इस

बातचीत से बच्चे कहानी और उसके क्रम को बेहतर समझ सके कि किस पात्र की क्या भूमिका है, और किस घटना के बाद कौन-सी घटना घटती है।

> **नाटक के द्वारा बच्चा आज जो समूह में कर रहा है, कल अकेले भी कर सकता है। कक्षाओं में नाटक करने के बाद बच्चे ख़ुद यह सोच पाते हैं कि उन्होंने क्या बेहतर किया और क्या बेहतर हो सकता है।**

मैंने उन्हें स्वयं अपना पात्र चुनने का मौक़ा दिया ताकि वे निर्णय ले सकें। जब मेरे द्वारा पात्र चयनित किए जाते थे तो वे आपस में लड़ते थे, लेकिन स्वयं किस पात्र की भूमिका करनी है, अच्छे-से चुनते थे। बच्चों के समूह बना दिए थे और सभी समूहों को एक ही नाटक की तैयारी करवाई ताकि सबको मौक़ा मिल सके, और कुछ बच्चों के न आने पर नाटक प्रभावित न हो। उन्होंने नाटक में बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया। कक्षा में इस तरह एक ही कहानी पर चार-पाँच समूहों द्वारा नाटक तैयार और प्रस्तुत किया जाता था।

नाटक की बारीक़ियाँ

स्टेज और तैयारी

कार्यकर्त्री ने कक्षा के एक कोने में पुरानी साड़ी से बना हुआ पर्दा भी लगवाया है। वे कहती हैं, "बच्चे नाटक शुरू करने से पहले पर्दा गिरा लेते हैं, और पर्दे के पीछे से बारी-बारी आते हैं। 'चिड़ा-चिड़िया' कहानी के नाटक के लिए उन्हें चिड़िया के पंख और चोंच बनाकर दे देती हूँ। इन्हें लगाकर वे चिड़िया की तरह फुदक-फुदककर संवाद बोलते हैं। इसी तरह, अन्य नाटकों में भी पात्रों के अनुसार बच्चों की मदद से मुखौटे बनाकर देती हूँ।"

नरेशन के साथ नाटक करना, और स्वयं संवाद बोलकर नाटक करना

बातचीत के दौरान यह प्रश्न आना ही था कि इतने छोटे बच्चे नाटक के संवाद कैसे तैयार कर पाते हैं। कार्यकर्त्री ने बताया, "बच्चों को दोनों तरीक़ों से नाटक करना भाता है। अलग-अलग कहानियों में उनकी पसन्द भी अलग है। उदाहरण के लिए, 'आसमान गिरा' कहानी में वे शुरुआती भूमिका के बाद नरेशन के साथ नाटक करना नहीं चाहते। वे कहते हैं, 'मैडम, बस अब आप रुक जाओ! शेर से हम बोलेंगे—"राजाजी आसमान गिरा, आसमान गिरा"।' बच्चे अपनी आवाज़ में पात्र के अनुसार उतार-चढ़ाव भी कर लेते हैं। मसलन, शेर की आवाज़ में दहाड़ते हुए बोलना, ख़रगोश की आवाज़ में धीरे-से बोलना, आदि। इसी तरह 'नीला फल' कहानी में भी उन्हें स्वयं संवाद बोलकर अभिनय करना अच्छा लगता है, क्योंकि यह बहुत छोटी है। लेकिन 'चिड़ा-चिड़िया' में वे नरेशन के साथ नाटक करना पसन्द करते हैं, क्योंकि यह कहानी बड़ी है, और इसमें पात्र भी ज़्यादा हैं। इस प्रक्रिया में वे अभिनय और संवाद में अपने ढंग से कुछ जोड़ते-घटाते यानी इम्प्रोवाइज़ भी करते हैं। इसमें उन्हें बहुत मज़ा आता है।"

कार्यकर्त्री बताती हैं, "अवलोकन यह भी रहा है कि नाटक करने से बच्चों की झिझक भी कम हुई है और उनका आत्मविश्वास भी बढ़ा है। अब बाहरी व्यक्तियों के आने पर भी वे बेधड़क नाटक कर पाते हैं। उनके माता-पिता भी उन्हें नाटक करते देख बहुत ख़ुश होते हैं। हमारे यहाँ नामांकन भी बढ़ गया है, और अब बहुत-से बच्चे आँगनवाड़ी आने लगे हैं।"

शाला-पूर्व शिक्षा और नाटक

कार्यकर्त्री ने यह भी साझा किया कि नाटक पर काम करने में शिक्षकों को अकसर यह भय होता है कि कक्षा में शोर होगा, बच्चे यहाँ से वहाँ भागेंगे, इतने छोटे बच्चे निर्देशों को समझ नहीं सकेंगे, आदि। लेकिन जो शिक्षक इसे कर लेते हैं, वे समझ पाते हैं कि नाटक पर काम करना एक बहुआयामी अनुभव है। आमतौर पर यह माना जाता है कि नाटक पर काम करने से भाषाई विकास होगा, लेकिन इससे न केवल भाषाई, बल्कि संज्ञानात्मक, सामाजिक और भावनात्मक विकास भी होता है। नाटक करने के दौरान सभी क्षमताओं (जैसे—चेहरे के हाव-भाव, आवाज़ का उतार-चढ़ाव, शारीरिक गतिशीलता और संवेदनाओं को महसूस कर पाना, बड़े समूह के सामने अपनी बात रखना, कल्पनाशक्ति, सही टाइमिंग और कारण तथा प्रभाव को समझना, आदि) का बेहतर इस्तेमाल होता दिखाई देता है। इसलिए नाटक को शिक्षण प्रक्रिया में शामिल करने से दूरगामी परिणाम मिलते हैं। नाटक के द्वारा बच्चा आज जो समूह में कर रहा है, कल अकेले भी कर सकता है। कक्षाओं में नाटक करने के बाद वे ख़ुद यह सोच पाते हैं कि उन्होंने क्या बेहतर किया और क्या बेहतर हो सकता है।

मीनाजी कहती हैं, "यदि आप भी बच्चों का अवलोकन करेंगे तो पाएँगे कि वे कल्पनाशील होते हैं, और दैनिक जीवन में झूठ बोलना, बहाने करना और अभिनय करना जानते हैं। वे अलग-अलग परिस्थितियों में अलग तरह से व्यवहार करते हैं, क्योंकि यह हमारे दिमाग़ की विकास प्रक्रिया का एक स्वाभाविक हिस्सा है। विद्यालय जाने से पूर्व ही बच्चे अकेले रोल-प्ले करते हुए या साथियों के साथ विभिन्न भूमिकाएँ निभाते हुए दिख रहे होते हैं। इनमें वे कभी माता-पिता की नक़ल कर रहे होते हैं, कभी परिवार के किसी अन्य सदस्य की। मैंने उनकी इसी क्षमता को और निखारने की एक कोशिश की है।"

नीतिगत दस्तावेज़ों में कला शिक्षा

कार्यकर्त्री द्वारा किए जा रहे काम और उनके सन्दर्भ को *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020* के प्रकाश में देखें तो यह नीति शाला-पूर्व शिक्षा में चित्रकला, पेंटिंग, अन्य दृश्य कलाओं, दस्तकारी, नाटक, कठपुतली, संगीत, नृत्य और शारीरिक गतिविधियों को शामिल करने की वकालत करती है। *एनसीएफ़-एफ़एस 2022*

के अनुसार कला और शिल्प बच्चों को अपने विचारों और भावनाओं को व्यक्त करने का एक और माध्यम प्रदान करते हैं।

शाला-पूर्व शिक्षा में कला से जुड़े सीखने के प्रतिफल मोटे तौर पर कुछ इस तरह से दिखते हैं :

- बच्चे तरह-तरह की कला सामग्री को पकड़ना और उनका उपयोग करना सीख सकें;
- शरीर के माध्यम से लय और ताल की खोज कर सकें;
- विचारों और भावनाओं को व्यक्त करने के लिए संगीत और नाटक का उपयोग कर सकें;
- कला के माध्यम से विभिन्न अभिव्यक्तियों, विचारों और भावनाओं की पहचान कर सकें; आदि।

शाला-पूर्व शिक्षा में कला शिक्षा का प्रमुख उद्देश्य बच्चे की पाँचों इन्द्रियों का विकास करना है। इसलिए इस शिक्षा का पाठ्यक्रम इस तरह से रचा-बुना गया हो कि उसमें उन्हें कलाओं से जुड़े तरह-तरह के अनुभव देने के पर्याप्त अवसर हों जिनसे उनका सर्वांगीण विकास हो सके। ऐसा विकास बच्चों को नाटक, गीत-संगीत, नृत्य, चित्रकारी जैसे कला के विभिन्न माध्यमों से जुड़ाव महसूस करने के अवसर दिए जाने पर ही सम्भव है। शाला-पूर्व शिक्षा इन सभी से जुड़ाव की शुरुआत करने के लिए उपयुक्त है।

समेकन

जैसा कि कहा जाता है, कला में केवल अन्तिम उत्पाद यानी मंचन ही महत्त्वपूर्ण नहीं होता, बल्कि पूरी प्रक्रिया अधिक मायने रखती है। इस प्रक्रिया के दौरान बच्चों ने क्या सीखा, क्या हासिल किया, यही महत्त्व की बात है। बच्चों को इस दौरान पूरी स्वतंत्रता दी गई कि वे ख़ुद तय करें कि उन्हें क्या करना है, और कैसे करना है। बच्चों ने कहानियों को सुना, समझा। उन्होंने तय किया कि नाटक में कब उन्हें नरेशन की ज़रूरत है, और कब वे ख़ुद संवाद बोल सकते हैं। लेकिन यह सब सम्भव हो पाया कार्यकर्त्री के बच्चों में विश्वास और प्रेरणा के कारण। उनके इसी विश्वास का परिणाम है कि इस आँगनवाड़ी में 4-5 साल के बच्चे भी वह कर पा रहे हैं जिसे करना आमतौर पर बड़े बच्चों और उनके शिक्षकों को भी कठिन लगता है।

पारुल बत्रा दुग्गल 2013 से मध्य प्रदेश के भोपाल में अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन में कार्यरत हैं। यहाँ उन्होंने शुरुआती पढ़ने-लिखने की प्रक्रियाओं को गहरे रूप से समझा है और इस समय शाला-पूर्व शिक्षा से जुड़ी हैं। आपकी बच्चों के लिए विभिन्न पुस्तकें समय-समय पर प्रकाशित होती रही हैं।

सम्पर्क : parul.duggal@azimpremjifoundation.org